जय राम जय राम
जय जय राम
राम राम राम राम
जय जय राम

सत्य साहित्य

वर्ष 5 / अंक 2
जनवरी 2022
Year 5/ No. 2
January
2022

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

भजिए राम नाम सुखदाई।
प्रेम भाव संताप भूल सर्वत्र,
भक्ति भाव उर लाई ॥१॥
मानवजन्म अमोलक पाकर,
उत्तम करिए कमाई ॥२॥
अमृत राम नाम मधुरतम,
सिमरो सुरती टिकाई ॥३॥
पाप ताप परिहरण, शरणकर,
सब दिन जो है सदाई ॥४॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- Discipline in Sadhna
- यात्री – भाग II
- शिष्य कैसा हो?
- अनुभूतियाँ
- श्रीरामशरणम्, मनाली: एक ऐतिहासिक विवरण
- विभिन्न केन्द्रों से
- Calendar
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

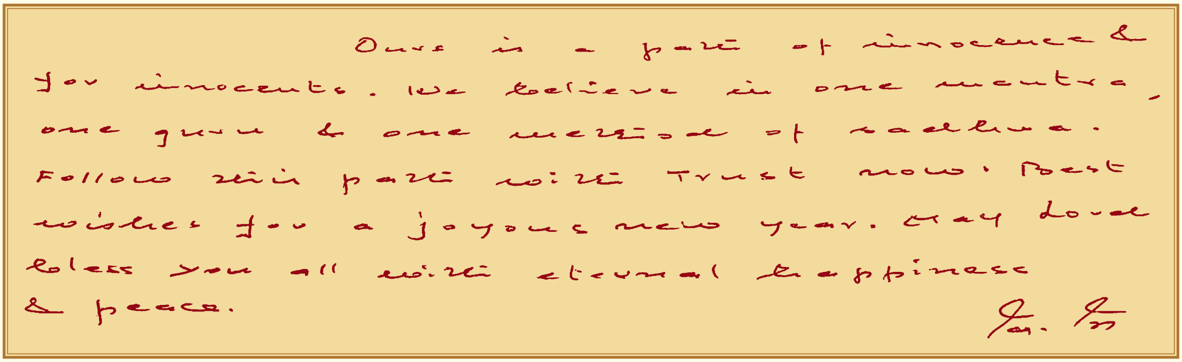

Ours is a path of innocence & for innocents. We believe in one mantra, one guru & one method of sadhana. Follow this path with trust now. Best wishes for a joyous new year. May Lord bless you all with eternal happiness & peace.

हमारा पथ सरल है और सरल व्यक्तियों के लिए है। हम एक मंत्र, एक गुरू और साधना की एक पद्धति में आस्था रखते हैं। अब हम अपनी साधना पद्धति का विश्वास के साथ अनुसरण करें। एक आनन्दमय नए वर्ष के लिए शुभकामनाएँ। परमात्मा आप सभी को शाश्वत शांति एवं खुशी दें।

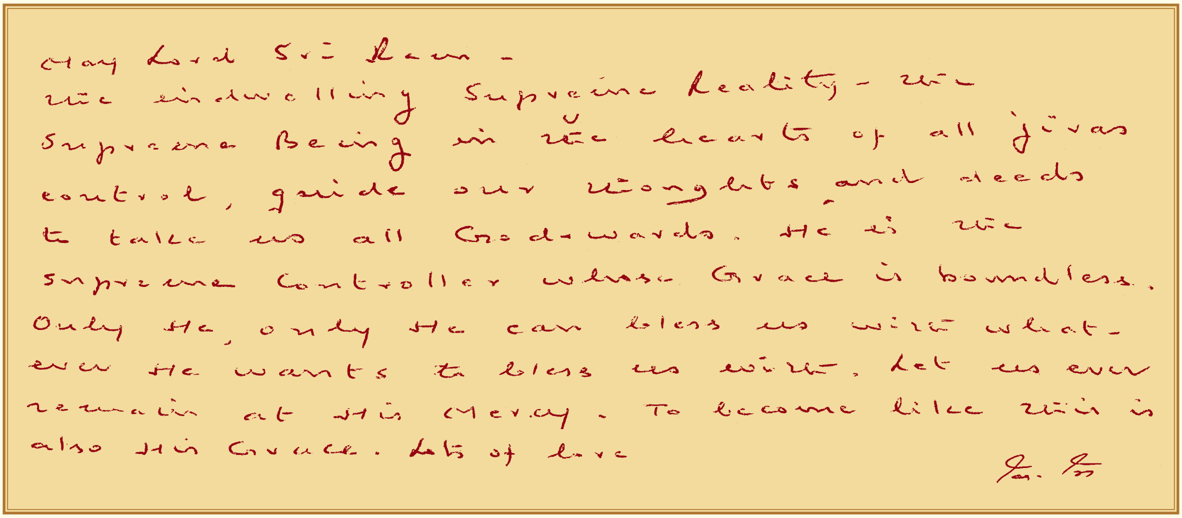

May Lord Sri Ram - the indwelling Supreme Reality - the Supreme Being in the hearts of all jivas control, guide our thoughts and deeds to take us all Godwards. He is the supreme Controller whose Grace is boundless. Only He, only He can bless us with whatever He wants to bless us with. Let us ever remain at His Mercy. To become like this is also His Grace. Lots of love

सभी जीवों के हृदय में निवास करने वाले परमात्मा, परम प्रभु श्री राम हमारे विचारों एवं कर्मों के नियन्त्रक बनें। हमारा मार्गदर्शन कर हमें ईश्वरोन्मुख बनाएँ। वह सर्वश्रेष्ठ नियन्त्रक है जिसकी कृपा असीम है। केवल वही, केवल वही हम पर कृपा कर सकता है जो करना चाहता है। हम हमेशा उसकी दया पर निर्भर रहें। ऐसा बन पाना भी उसकी ही कृपा है। बहुत–बहुत प्यार।

Discipline in Sadhna

सत्यानन्द

One should inculcate discipline in one's life. Get rid of ego. Do not allow pride to creep in, this poses an obstruction in Sadhna. One should become very humble. Pride can be overcome by humility and anger by love. There is no other way of overcoming pride and anger. Until there is humility, love and service, there can be no progress in sadhna.

Pride and anger become obstructions in Sadhna. So anger should be overcome by love and pride and ego by humility and self-effacing service. Service is the true adornment of the house and embellishment of Satsang. He alone is great who is a great servant. He who is a servant can alone be humble. Goswami ji imbibed devotion and service from Shree Ram's life. From incidents like Shree Ram's association with tribals, embracing Nishad, accepting service from them, etc. To give an example, Goswami Tulsidas ji held up a shoe and asked Shri Nabhadas ji for food.

Sadhana Satsang, Delhi, Date : 5.4.1955, Time : 11.00 a.m. (Pravchan Piyush p. 292).

यात्री-भाग II

प्रेम

परम कृपा स्वरूप की थोड़ी सी भी करुणा किरण जब–जब किसी की ओर रुख करती है तो उस प्राणी में भक्ति भागीरथी ठाठें मारने लगती है। आर्य समाज की धर्म शिक्षा द्वारा जिसकी श्रद्धा के द्वार खुले ही नहीं थे, प्रभु के विशाल मन्दिरों के लिये हृदय में बहुत आदर नहीं था। ऐसा विवेकहीन यात्री कर्नल (डाक्टर) मोहन्ती के साथ प्रभु प्रेरणा से श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर देखने गया। यहाँ कभी भी छूआछूत नहीं थी। चाम की किसी भी वस्तु को मन्दिर में ले जाना वर्जित था इसलिए चाम के बटुवे जेब से निकाल कर, कर्नल साहब ने एक अपने परिचित डाक्टर की दुकान पर रखवा दिये। जूते भी वहीं छोड़ दिये।

मन्दिर के बाहर ही काली माता की मूर्ति है। सड़क पर चलने वाले को वहीं से दर्शन हो जाते हैं। सड़क पर बड़ी भीड़ रहती है। कर्नल साहब ने सड़क पर लेट कर दण्डवत् नमस्कार किया, जिसे यात्री देख कर चकित हो गया। फिर मन्दिर में प्रवेश कर के कर्नल साहब ने सब छोटे–बड़े देवी देवताओं के आगे जा–जा कर उसी प्रकार बड़ी श्रद्धा पूर्ण वन्दना की। परन्तु यात्री में अभी ऐंठन थी। जो धीरे–धीरे पूर्ण हो रही थी।

बाहर लौटने से पूर्व दलान में आये। वहाँ पुजारी लोग प्रसाद लेकर बैठे थे। भात–साग आदि का प्रसाद होता है – जो बिकता है। उसी स्थान में पुजारियों के पास ही पड़े मिट्टी के घड़े को तोड़ कर टुकड़े (फिब्बर) Plate तशतरी का काम देते हैं। लोग उनमें प्रसाद डाल कर खा लेते हैं, जूठ भी लगी रहती है। परन्तु उसे सब पवित्र और पावन ही मानते हैं। कुछ लोगों को हाथों उँगलियों से प्रसाद को निकाल कर चख कर, फिर वापस पुजारी के बर्तन में भी डालते हुए उस यात्री ने देखा। उसको कभी भी यह विचार नहीं आया था कि ऐसे प्रसाद को एक डाक्टर कर्नल (जो विदेश भी रह आए हों) भी श्रद्धा पूर्वक स्वीकार करेंगे। परन्तु कर्नल साहब ने बड़े प्रेमपूर्वक एक फिब्बर उठाया – उसमें जूठ लगी हुई थी – क्योंकि कितने ही लोगों ने खाया होगा। उसी में पुजारी से दो रुपये का प्रसाद खरीद कर डाल लिया और यात्री को साथ बिठला कर खाना आरम्भ कर दिया। कर्नल साहब कहने लगे बाल्मीकीय रामायण में यह वर्णन आता है कि आर्य जाति में छूआछूत नहीं थी भगवान ने भी अपने वनवास काल में जिस भोजन की हार्दिक प्रशंसा की है वह भीलनी के (जूठे) चखे हुए जंगली बेर थे।

परम कृपा स्वरूप की थोड़ी सी भी करुणा किरण जब-जब किसी की ओर रुख करती है तो उस प्राणी में भक्ति भागीरथी ठाठें मारने लगती है।

यात्री का हृदय पसीज गया और गद्‌गद् होकर भगवान से क्षमा माँगी और बड़े भाव सहित प्रसाद को भोग लगाया। उस देवाधिदेव ने किस प्रकार यात्री की ऐंठन को निकालने के लिए इतनी लम्बी यात्रा के भार का कष्ट अपने कन्धों पर लिया।

अब पुरी की यात्रा के बाद 'कोणार्क' भगवान ने पहुँचाना था। साइकिल किराये पर डाक्टर साहब ने 5 रु० प्रतिदिन पर ले दिया। सायंकाल का समय था। रास्ता बता दिया साथ कह दिया कि इस समय नहीं जाना क्योंकि रास्ता अच्छा नहीं! जंगल भी है। दिन के समय किसी अन्य से भी राह पूछते जाना।

यात्री बहुत उतावला था, शीतकाल का आरम्भ था। बादल भी आकाश में कहीं–2 दिखाई देते थे। परन्तु श्रीराम भरोसे निर्भय होकर चल पड़ा। 5–7 मील साइकिल चलाने पर रेलवे लाइन आ गई पर गेट बन्द था। गाड़ी के आने का समय था। गेट के साथ वाले रास्ते से जब साइकिल निकाल ही रहा था, तो सामने से दो आदमी आते दिखे। उनसे यात्री ने पूछा कि क्या यह रास्ता कोणार्क को जायेगा ? उन्होंने कहा 'हाँ' 'परन्तु यह कोई समय नहीं जाने का। आधी रात होने को है सब जंगल और उजाड़ है। अकेले इस ओर जाना उचित नहीं। यह मार्ग ठीक नहीं।'

एक क्षण की संगति ने भय का विचार यात्री के मन में डाल दिया। आगे अब कैसे जाए? इतनी दूर आने पर अब वापस भी लौटने

को जी नहीं था। फिर सदा के सहायक राम नाम को याद करते आगे बढ़ा। अब सड़क रेतीली हो चुकी थी। साइकिल चलाना कठिन हो रहा था। थोड़ी दूर जाकर नदी आ गई। जब पुल के मध्य में पहुँचा तो दूसरे पार से जानवर की गर्जना सुनाई दी। हृदय काँप गया। छुपे तो कहाँ? भागे तो किस ओर? आधी रात बीत चुकी थी। कोई आदमी, समीप न था। यदि यहाँ जीवन का अन्त हो जाये तो परदेशी की करुणाजनक कहानी किसी को पता भी नहीं लगेगी। थोडी सी घबराहट हुई ही थी कि श्रीराम नाम की पावन ध्वनि ने अपने उर से लगा लिया – गर्जना बन्द हो गई। यात्री आगे बढ़ने लगा – कदम तेज हो गया। एक हाथ में साइकिल था और दूसरे में माला के अन्दर दैवी शक्ति थी जो खेंचे लिए जा रही थी, परन्तु कोई रास्ता नहीं था और नारियल के ऊँचे–ऊँचे पेड़ थे। अन्दर से पसीना गीला कर रहा था और बाहर से वर्षा –

निर्जन वन विपद् हो घोर,
निबिड़ निशा तम सब ओर।
जोत जब राम नाम की जगे,
संकट सर्व सहज से भगे।।

हरि नाम जप रहा था और दौड़ता जा रहा था। निशा भी जा रही थी निराशा भी! जब थक कर चूर हो गया और पसीना–पसीना हो गया तो सामने टीला आ गया। जिस पर धीरे–धीरे चढ़ा, ऊपर सरकारी (Rest House) विश्राम गृह था। चौकीदार–चौकीदार कह कर पुकारा परन्तु कोई उत्तर नहीं आया। रैस्ट हाऊस में ही रात्रि का अन्तिम भाग विश्राम किया और प्रातः काल तरो ताजा होकर उठा – परमेश्वर को धन्यवाद किया और आगे चला। नदियाँ नाले लाँघता हुआ – "गोप" गाँव में जा पहुँचा। अब वहाँ से कोणार्क का 'मार्ग' पूछना था। भूख भी लग रही थी। इतने में सामने से एक युवक दिखाई दिया। उसने बड़े प्रेमपूर्वक स्वागत किया। और अपने खाने में से खाने–पीने को बहुत कुछ दिया तथा कोणार्क साथ चलने को तैयार हो गया। उस युवक के मंगल मिलाप से बड़ा हर्ष हुआ।

यात्री का हृदय गद्‌गद् होकर अपने राम का धन्यवाद कर रहा था। बड़ा आभारी होकर उनका शुभ नाम पूछा। "कृष्णचन्द्र" उत्तर मिला। भगवान ! भगवान! तू सर्वत्र विद्यमान है – तेरी लीला अपरम्पार है, यात्री ने बड़ी नम्रतापूर्वक कहा – भगवन मुझे कोणार्क जाना है क्या आप? "हां – मैं भी साइकिल ले आता हूँ और साथ ही चलूँगा। परन्तु कुछ खा तो लो।"

भूख तो लगी ही थी। यात्री को खाने के लिए 'रसगुल्ले' आदि ऐसी मिठाई मिली मानो पंजाब के किसी शहर में ही बैठा हो। फिर श्रीकृष्णचन्द्र जी साथ थे। साथ रहे। दीन दयाल श्री राम तेरी जय हो।

यात्रा में बहुत देर साथ–साथ रहे।
साइकिल सवार रहे।

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज जी का लेख, नवम्बर 1962 के सत्य साहित्य अंक में प्रकाशित। पिछले अंक में यात्री भाग । प्रकाशित किया गया था।)

शिष्य कैसा हो?

विश्वामित्र

तुकाराम की चर्चा के अंतर्गत गुरु–शिष्य सम्बंध की चर्चा चल रही थी। गुरु–शिष्य संबंध, एक delicate संबंध, एक सच्चा संबंध है। कल आपजी ने देखा कि भगवान श्री ने अपने प्रिय भक्त तुकाराम के स्वप्न में गुरु महाराज को भेजा है। गुरु महाराज से सपने में ही तुकाराम को नामदान मिलता है और सपने में ही गुरु–दक्षिणा की बात चल रही थी। गुरु–दक्षिणा में गुरु महाराज तुकाराम से एक पाव 'तूप' माँगते हैं। संत–महात्मा तूप का अर्थ समझाते हैं, 'मैं और मेरापन'। तूप का एक और अर्थ है, 'सारे के सारे देह भाव'। गुरु और कुछ नहीं चाहता है। सच्चा गुरु चाहता है कि आप अपना मन गुरु को दे दें और निर्मन हो जाएँ। यही सच्ची गुरु दक्षिणा है।

गुरु नहीं चाहता कि आपका अपना मन आपके पास रहे। अपने मन जैसी चीज है ही नहीं कोई, यह तो आपने बनाई हुई है। 'अपने मन' से मुक्ति तो संसार से मुक्ति और माया से मुक्ति है। तूप का एक और अर्थ भी होता है, वह है चिकनाहट या चिपचिपाहट।

गुरु समझाते हैं कि जितनी भी आसक्तियाँ हैं वे सांसारिक और देह संबंधी हैं। परिवार के साथ आसक्ति, धन के साथ आसक्ति, मकान के साथ आसक्ति। इसीलिए गुरु कहते हैं कि जहाँ कहीं भी आपने मन की तारें जोड़कर रखी हैं उन सबको तोड़कर निर्मन हो जाओ। सारी की सारी आसक्तियाँ मुझे दे दो, मेरी तरफ इनका मुँह मोड़ दो, मैं उनको परमात्मा से जोड़ दूँगा।

सच्चा गुरु अपने शिष्यों की सारी की सारी आसक्तियों को, जितनी भी तारें इधर–उधर जोड़ी या बिखरी हुई हैं–scattered mind, को इकट्ठा करके अपने साथ जोड़कर, आकर्षित करके तो उसका रुख परमात्मा की ओर जोड़ देता है। ऐसा सच्चा गुरु ही कर सकता है क्योंकि वे जानते हैं कि परमात्मा से तार कैसे जोड़ना है, जैसे स्वामी जी महाराज। स्वामी जी महाराज दीक्षा के वक्त हम सबको परमात्मा के श्री चरणों में सौंप देते हैं और हमारा संबंध परमात्मा के साथ जोड़ते हैं, तो यह वही कर सकेगा जो परमात्मा के साथ संबंध जोड़ने की कला को, शैली को जानता है। हर कोई तो यह नहीं कर सकता है इसलिए साधकजनो संतवाणी कहती है कि गुरु का, संत का कर्तव्य है कि वह शिष्यों के मन को संभाले। ये और कोई नहीं कर सकेगा।

शिष्यों का कर्तव्य है कि वे गुरु के शरीर को संभालें क्योंकि गुरु अपने शरीर को परमात्मा को दे चुका हुआ होता है, अपने शिष्यों को दे चुका हुआ होता है। गुरुवाणी कहती है, संतवाणी कहती है, ठोक बजाकर कहती है कि मन को जिस प्रकार गुरु संभालता है, गुरु के सिवा हमारे मन को कोई और संभाल नहीं सकता। अतएव शिष्यों को चाहिए कि उसकी देह की संभाल करे क्योंकि गुरु बिक चुका है, उसकी देह उसकी अपनी नहीं है।

बहुत वर्ष पहले की बात नहीं है साधकजनो,

आपको श्रीरामशरणम् की तभी याद आए, जब कोई दुःख तकलीफ हो तो मैं ऐसे साधक को अच्छा साधक नहीं समझता। आपकी प्रमुखता आपके लिए दुःख तकलीफ है, श्रीरामशरणम् नहीं, भक्ति नहीं। काश! आपने भक्ति की कीमत जानी हुई होती तो कभी श्रीरामशरणम् जाना छोड़ते ही न, आते रहते। परमात्मा की भक्ति करते तो आपको पता लगता कि भक्ति सारी की सारी समस्याओं का समाधान है। आपने उस अनमोल चीज़ को पाना ही नहीं चाहा।

एक संत महात्मा हुए। उनके आसपास रहने वाले शिष्य, जिन्हें औरों की अपेक्षा ज्यादा हिम्मत होती है, वह हर तरह की बात कर लेते हैं। यह सदुपयोग तो नहीं दुरुपयोग है। तो उन्होंने संत महात्मा को 'भगवान' कहना शुरू कर दिया। देवियो और सज्जनो, हरेक को अपने–अपने गुरु की रुचि देखनी चाहिए कि उसे क्या रुचिकर है और तदनुसार सेवा करे तो उसकी सेवा सराहनीय होगी, अन्यथा नहीं। कोई भगवान कहलवाना चाहते हैं, प्रभु कहलवाना चाहते हैं लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो बिल्कुल कुछ भी ऐसा नहीं चाहते हैं।

शिष्य को देखना चाहिए कि गुरु क्या चाहता है, उसकी खुशी किस चीज में है। गुरु को खुश रखना ही शिष्य का कर्तव्य है, उसी में उसका शिष्यत्व है। आज गुरु ने रोका, "खबरदार, मुझे आगे से कभी भगवान मत कहना।" "आप तो हो भगवान", शिष्य ने कहा। गुरु ने डाँटा, "चापलूस! मैं ऐसी कुप्रथा नहीं शुरू करना चाहता कि इंसान को भगवान माना जाए।" स्वामीजी महाराज भी फरमाते हैं "अपने–अपने माता–पिता के पैर छूओ, सास–ससुर के पैर छूओ, अध्यापकों के पैर छुओ, उनसे आशीर्वाद लो। आशीर्वाद का अपना महत्व है, लीजिएगा। लेकिन गुरु परम्परा में मैं इसे (पैर छूने को) कुप्रथा मानता हूँ इसलिए मैंने यह सिलसिला शुरू नहीं किया"। हमें यह देखना है कि स्वामी जी महाराज को क्या अच्छा लगता है। हमारा शिष्यत्व इसी में है कि हम स्वामीजी महाराज की प्रसन्नता देखें, उनका रुख देखें कि वे क्या चाहते हैं, तदनुसार चलें। गुरु महाराज हम शिष्यों की आसक्तियों को तोड़कर परमात्मा के साथ जोड़ते हैं, यह गुरु का रोल है। ये स्थान ''श्रीरामशरणम्'', जहाँ आप पधारते हैं साधकजनो स्वामी जी महाराज के नियमों के अनुसार ये स्थान समाज सेवा का स्थान नहीं है। उन्होंने कोई ऐसी service जिसे समाज सेवा कहा जाता है, शुरु नहीं की। उन्होंने अपनी trust deed में ये चीज़ें लिखी ही नहीं–pure आध्यात्मिक pure spiritual स्थान। भक्ति करने का स्थान, भक्ति पाने का स्थान, परमात्मा की पूजा करने का स्थान, शान्ति लाभ करने का स्थान, परमानन्द लाभ करने का स्थान, मोक्ष प्राप्ति के साधन अपनाने का स्थान और साधना करने का स्थान है।

सामान्य मन्दिरों में तो आप ज्यादा से ज्यादा पाँच एक मिनट के लिए जाते हैं। प्रसाद चढ़ाया, प्रसाद लिया और वापिस, माथा टेका, मन्दिर बंद है खुला है, कोई बैठा है वहाँ पर या नहीं बैठा कोई फर्क नहीं पड़ता। यहाँ पर परमेश्वर की कृपा एक घण्टा, डेढ घण्टा भी लोग बैठते हैं। दो–दो घण्टे भी यहाँ पर बैठते हैं; नाम जपते हैं, साधना करते हैं, परमात्मा की भक्ति करते हैं, परमात्मा का पूजन करते हैं,

मन ही मन न जाने व्यक्ति क्या–क्या करते हैं। जहाँ भी श्रीरामशरणम् बना हुआ है इसी काम के लिए और इसका यही प्रयोग होना चाहिए। आपको श्रीरामशरणम् की तभी याद आए, जब कोई दुःख तकलीफ हो तो मैं ऐसे साधक को अच्छा साधक नहीं समझता। आपकी प्रमुखता आपके लिए दुःख तकलीफ है, श्रीरामशरणम् नहीं, भक्ति नहीं। काश! आपने भक्ति की कीमत जानी हुई होती तो कभी श्रीरामशरणम् जाना छोड़ते ही न, आते रहते। परमात्मा की भक्ति करते तो आपको पता लगता कि भक्ति सारी की सारी समस्याओं का समाधान है। आपने उस अनमोल चीज़ को पाना ही नहीं चाहा। आप तो बस एक ही चीज़ चाहते हो कि मेरे कष्ट, मेरे रुके काम, मेरे बिगड़े काम किसी प्रकार से बनें। अच्छे शिष्य नहीं, गुरु के दुःख का कारण, कष्ट का कारण तकलीफ का कारण। स्वामी जी महाराज को कितना कष्ट होता होगा ऐसे साधकों को देख कर लेकिन फिर भी साधक ही कहते हैं, शिष्य ही कहते हैं। कैसे छोड़ें, गुरुजन जो हुए? छोड़ नहीं सकते, तिरस्कार नहीं कर सकते, कहीं दूर फैंक नहीं सकते, अपने अंग हैं, कैसे अंगों को तोड़ें? कैसे अंगों को फोड़ें? कैसे उनको काट कर दूर फैंकें? वह नहीं कर सकते। लेकिन भीतर ही भीतर कष्ट तो होता ही है। जहाँ लायक बच्चे होते हैं, वह दो चार ही होते हैं, बहु संख्या तो नालायकों की ही हुआ करती है। यह संसार इसी प्रकार का है। (क्रमशः....)

(महाराज जी के 1 फरवरी 2010 के प्रवचन के अंश, जिसका प्रथम भाग सत्य साहित्य के अक्टूबर 2021 में छपा था)

अनुभूतियाँ

'गुरुजन सदा अंग संग हैं!'

यह उन दिनों की बात जब स्वामी जी महाराज अन्तिम बार कलकत्ता पधारे थे, उनका स्वास्थ्य कुछ खराब था और किसी शिष्य को नहीं मालूम था कि महाराज जी यहाँ आए हुए हैं। इस बात से अनभिज्ञ कि स्वामी जी महाराज कलकत्ता में हैं मैंने भी पंजाब जाने का कार्यक्रम बना लिया। उन दिनों काफी गर्मी थी। जब कभी भी मैं कलकत्ता से बाहर जाती थी तो हमेशा स्वामी जी महाराज के पावन चरणों में प्रणाम करके ही घर से निकलती थी। उस दिन दुर्भाग्यवश चरण स्पर्श करना भूल गई और जल्दी में स्टेशन जाने के लिए मोटर में बैठ गई। बैठते ही मुझे ख्याल आया कि मैंने तो स्वामी जी महाराज के चरणों में प्रणाम ही नहीं किया। मुझे हार्दिक दुःख हुआ। मैंने तुरन्त अन्दर वापिस जाना चाहा, मगर अपने पूजनीय पतिदेव के डर के कारण नहीं गई क्योंकि स्टेशन के लिए देरी हो सकती थी। मैं मन में बड़ा पश्चात्ताप करते–करते जा रही थी कि हावड़ा पुल पार करके क्या देखती हूँ! थापर साहिब की कार हमारी कार के आगे–आगे जा रही है और उसमें स्वामी जी महाराज विराजमान हैं। मेरी प्रसन्नता की कोई सीमा न रही। जब हम स्टेशन पहुँचे तो वहाँ हम स्वामी जी महाराज को उनके डिब्बे में जा कर मिले। वहाँ हमें स्वामी जी महाराज के दर्शन हुए। उस समय स्वामी जी महाराज अलीगढ़ जा रहे थे। उसी गाड़ी में ही यात्रा की।

(सत्य साहित्य के मई 1962 अंक में प्रकाशित 'आप बीती')

‘Pujniya Gurujans are always there for us.’

In May 2021 I came down with Covid-19. My temperature raged at 104 degrees and the medication would only momentarily bring it down by one degree. I was in much pain and my oxygen levels were falling, but I had a feeling of hope. At every moment in my heart 'Ram Ram' jaap was going on. Despite such high fever, an unseen power was waking me up during the night to fill water and helping me soak my feet and sponge myself.

One day when I was in immense pain and in an almost subconscious state, I sensed a star sparkling in the space between my eyebrows. Behind the star I could see Param Pujniya Maharaj Ji in a seated position. HE assured with a hand gesture that all was going to be fine.

At that time no hospital had a vacant bed but my darshan of Pujniya Maharaj Ji had given me hope. Soon the fever began to come down, my neighbours got oxygen cylinders and the full set-up that was needed. In a few days the doctor told me that I was free of Covid, though recovery would take time .

Pujniya Guru Ji's Kripa did not end here. From the day I had HIS Darshan, there was a guiding force which wake me up each morning by 4 or 4:30 a.m. After freshening up, I was made to sit for meditation. Though during the day I was too unwell to sit, during meditation I could sit without any support with my spine erect. There were heavenly experiences which I had never felt until then.

I am short of words to explain my feelings and experiences of those days. I know I am blessed and continuously being taken care by the Almighty. I also sincerely believe that our Pujniya Gurujans are always there for us. ■

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के संस्मरण

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज ने जिस दिन पंच रात्रि सत्संग में हम सब लोगों को श्री अधिष्ठान जी वितरण किए थे, उसके एक दिन पूर्व रात्रि श्री स्वामी जी महाराज हमारे कमरे में आए और पूछने लगे कि श्री अधिष्ठान जी किस–किस को चाहिए? सब इच्छुक साधकों के साथ मैंने भी कहा कि मुझे भी चाहिए। तब श्री स्वामी जी महाराज ने कहा कि अरे तू क्या करेगा। फिर कहा कि अच्छा बचेगा तो मिल जाएगा। मैं सोते समय तक इसी चिन्ता में रहा कि श्री अधिष्ठान जी बचेंगे या नहीं मुझे मिलेंगे या नहीं और मैं इसी चिन्ता में सो गया। तब स्वप्न में क्या देखता हूँ कि मुझे श्री स्वामी जी महाराज ने श्री अधिष्ठान जी दे दिए और थोड़ी देर के बाद देखा कि श्री अधिष्ठान जी में कुछ सिलवटें सी पड़ गईं हैं। सुबह जागने के बाद मुझे स्वप्न पर कोई विश्वास नहीं था। परन्तु जिस समय श्री स्वामी जी महाराज ने श्री अधिष्ठान जी वितरण किए तो मुझे भी दे दिया। श्री अधिष्ठान जी पाकर मैं बहुत प्रसन्न था। फिर ताँगे में बैठ घर आते समय श्री अधिष्ठान जी को मैंने कपड़े में लपेट कर हाथ में ले लिया, बाद में देखा तो उनमें कुछ सलवटें पड़ गईं थीं। इस तरह स्वप्न में श्री अधिष्ठान जी दिए तो सुबह सचमुच भी मिल गए, जब कि मुझे आशा नहीं थी।

(सत्य साहित्य के मार्च 1962 अंक में प्रकाशित) ■

श्रीरामशरणम् मनाली - एक ऐतिहासिक विवरण

('श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण' के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)

श्री रामशरणम् परमात्मा 'श्री राम' का आयतन'। भक्ति, प्रेम, शान्ति एवं शरणागति का पवित्र मन्दिर। आध्यात्मिक उन्नति के लिए अद्वितीय संस्थापन, श्रद्धेय डॉ. विश्वामित्र जी महाराज की तपोभूमि यह तीर्थ स्थली श्री रामशरणम् मनाली है।

ऑल इंडिया इन्सटीटयूट आफॅ मेडिकल सांईसिस दिल्ली में 22 वर्ष की गौरवशाली सेवा के उपरान्त भगवद्प्रेरित उत्कंठ इच्छा से 30 अप्रैल 1988 को पूर्व निवृत हो, श्री महाराज जी मनाली की ओर उन्मुख हुए। मनाली का आध्यात्मिक रुपान्तरण का समय उदय हो गया। 6 मई 1988 को गुरुदेव ने मनाली की भूमि पर पग धरे। साढ़े पाँच वर्ष की साधना, तप, त्याग का अधिकांश समय लॉग हट परिसर स्थित एक मिट्टी से पोती हुई छोटी सी कुटिया में व्यतीत हुआ, जिसमें महाराज जी की ऊँचाई भर जितना स्थान था। तब से आज तक मनाली, लाहौल व आसपास के हज़ारों साधक राम–नाम की उपासना से लाभान्वित हो रहे हैं। मानव सेवा एवं मानव कल्याण महाराज जी के व्यक्तित्व का महत्वशाली अंग था। 1990 से ''दवाई वाले बाबा'' के नाम से प्रसिद्ध हो गए। निःशुल्क दवाईयाँ बाँटते और मामी जी तथा अन्य लोगों के साथ अमृतवाणी का पाठ करने लगे और इस प्रकार सत्संग का शुभारम्भ हुआ। श्रीमति रुल्दी देवी 'मामी' ने माँ की भान्ति साधनकाल में पूज्य गुरुदेव की सेवा का पुण्य लाभ लिया। पूज्य महाराज श्री ने उनको माँ की पद्वी से सम्मानित किया।

इसके उपरान्त पूज्य महाराज श्री लोगों को साथ बिठा कर शुरू–शुरू में भजन पाठ कुटिया में किया करते थे। कुछ समय पश्चात श्री अमृतवाणी का पुण्य पाठ भी कुटिया में किया जाने लगा जिसमें महाराज श्री स्वयं "सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय: नम:" से शुरू करके बिना ढोलक बाजे के सिर्फ तालियों के साथ श्री अमृतवाणी का पुण्य पाठ किया करते थे। जिसमें महाराज श्री स्वयं मंजीरा बजाते थे और स्वयं रोज़ एक भजन भी गाते थे और लोगों को राम नाम की महिमा से अवगत कराते हुए राम रंग में रंगना शुरू किया। पूज्य महाराज श्री की साधना से लोग प्रभावित होते गए और धीरे–धीरे साधकों की संख्या बढ़नी शुरू हुई

तब पूज्य महाराज श्री ने, श्री अमृतवाणी का पाठ अपनी कुटिया के बाहर साप्ताहिक पाठ (सायं 4 से 5 बजे) शुरू किया। कभी कभी मनु मन्दिर (मनाली गांव) व मामी जी के शनाग वाले पुराने घर में भी श्री अमृतवाणी का पाठ करते थे। जब महाराज श्री अपनी साधना की चरम सीमा पर थे तो बाहरी प्रांतों से बहुत साधक आने लगे जिसके कारण वह स्थान भी छोटा पड़ने लगा। मनाली में 5 वर्षों की तपस्या के बाद महाराज श्री को श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से 9 दिसंबर 1993 को गुरु पद प्रदान किया व उनका तिलक समारोह सम्पन्न हुआ।

पूज्य महाराज श्री को मनाली से बहुत प्रेम था इसलिए वे हर साल लगभग एक माह के लिए मनाली प्रवास पर आते रहे। पूज्य महाराज श्री के गुरु पद संभालने के पश्चात तो मानो राम–नाम की बाढ़ सी आ गई। मनाली गांव व शनाग गांव में तकरीबन हर घर से लोगों ने दीक्षा ली व अन्य स्थानों के लोगों ने भी दीक्षा लेनी प्रारम्भ की। साधकों की संख्या में एकाएक बहुत बढ़ोतरी होने लगी जिससे वह स्थान भी बहुत छोटा पड़ने लगा।

तब पूज्य महाराज श्री ने श्री रामशरणम् बनाने की इच्छा प्रकट की। कुटिया वाली ज़मीन श्री रामशरणम् के लिए, श्री रामशरणम् सोसायटी मनाली के नाम पर, श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट व साधकों के यथासम्भव सहयोग से खरीदी गई। पूज्य महाराज श्री की आज्ञा अनुसार श्री रामशरणम् का नक्शा पहाड़ी शैली में तैयार किया गया। इस तपोस्थली पर भव्य श्री रामशरणम् के निर्माण की स्वीकृति मिली। श्री रामशरणम् का विधिवत् शिलान्यास 30 अक्टूबर 1997 तदनुसार कार्तिक 14 विक्रमी सम्वत् 2054 गुरुवार को परम श्रद्धेय डॉ विश्वामित्र जी महाराज के कर कमलों द्वारा दीपावली के दिन किया गया। जो लगभग 19 माह में बन कर तैयार हुआ, जिसका विधिवत उद्घाटन 16 जून 1999 तदनुसार 2 प्रविष्टे आषाढ़ विक्रमी सम्वत् 2056 बुधवार के शुभ दिन को पूज्य महाराज श्री के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। श्री रामशरणम् के अनुरूप ही सत्संग हॉल में श्री अधिष्ठान जी की स्थापना की गई। उद्घाटन दिवस के दिन, हवन के दौरान पूज्य महाराज श्री स्वयं पूरे समय उपस्थित रहे व अपने करकमलों से हवन में पूरे आनन्द व भाव–चाव से आहुतियाँ दीं। उसके बाद प्रीति भोज हुआ जिसमें हज़ारों की संख्या में लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

पूज्य महाराज श्री के मनाली प्रवास के दौरान प्रतिदिन सायं 4 से 5 बजे तक श्री अमृतवाणी का पुण्य पाठ होता था और साल के बाकी समय सत्संग साप्ताहिक होता था। कुछ समय पश्चात् पूज्य महाराज श्री ने सत्संग प्रतिदिन करने का निर्देश दिया। पूज्य महाराज श्री ने 2007 बिलासपुर साधना सत्संग के दौरान सत्संग के समय को प्रतिदिन प्रातः 7 से 8 बजे निर्धारित किया।

पूज्य महाराज श्री को मनाली से बहुत प्रेम रहा व महाराज श्री ने मनाली में खुले सत्संग की आज्ञा दी। खुले सत्संग की तिथि 14–16 जून निर्धारित की गई। बीच में एक बार अगस्त के लिए तिथि बदली लेकिन बरसात के कारण रास्ते बंद हो गए। तब से महाराज श्री ने जून में ही सत्संग करने की आज्ञा दी। महाराज श्री ने इसी तपोस्थली पर बहुत से लेखन कार्य किए। श्री अमृतवाणी पाठ की व्याख्या अपनी कुटिया में की है। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

अक्तूबर से दिसम्बर 2021

- **लखनऊ**, उत्तरप्रदेश में 1 अक्तूबर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 13 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **इन्दौर**, मध्य प्रदेश में 3 अक्तूबर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 335 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मनाली**, हिमाचल प्रदेश में 22 अक्तूबर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 36 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **चण्डीगढ़** में 7 नवम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 44 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फाज़लपुर**, कपूरथला पंजाब में 20 से 21 नवम्बर खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 15 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **होशंगाबाद**, मध्यप्रदेश में 7 से 8 दिसम्बर को अखण्ड जाप का और 8 से 9 दिसम्बर तक अखण्ड श्री रामायण पाठ का आयोजन हुआ। 9 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 526 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **उज्जैन,** मध्यप्रदेश में 26 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद नाम दीक्षा हुई।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में अक्तूबर, नवम्बर, दिसम्बर में 60 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **धारीवाल**, पंजाब में 24 दिसम्बर को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ जिसके बाद नाम दीक्षा का कार्यक्रम भी हुआ।
- **तारागढ़**, पंजाब में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है। लगभग दो महीने में पूरा होने की आशा है। ■

Online Programmes held between 21 September 21 – 9 December 2021

With the Grace of Param Pujniya Gurujans, online Satsangs have been broadcast regularly via Shree Ram Sharnam's Official Face Book and YouTube channels. Shree Ram Sharnam, Delhi also has a presence on Instagram and Twitter.

Daily Satsang has been attended by 3436 sadhaks on average and Sunday satsangs by 4746 sadhaks. Special programmes have also been enthusiastically attended online. Avtaran Divas of Param Pujniya Prem Ji Maharaj on 2 October was attended by 4500 sadhaks on YouTube and 8500 on Facebook. The Deepawali Satsang on 4 November was attended by 4,300. On 13 November, the Nirvan Divas of Param Pujniya Swami Ji Maharaj was attended by 3,785 on Facebook and 2,276 on YouTube. The programme for the Tilak Divas of Param Pujniya Maharaji, 9 December was attended by 20,000 in morning and 4500 in evening.

Forthcoming programme in December 2021: Akhand Ramayan Paath will be broadcast on 31 December and will conclude on 1 January 2022. ■

OPEN SATSANG 2022

Jhabua	16 to 18 January	Sunday to Tuesday
Pilibanga	29 to 30 January	Saturday to Sunday
Bilaspur	11 to 13 Feburary	Friday to Sunday
Sirsa	26 to 27 Feburary	Saturday to Sunday
Hoshiarpur	6 Mar	Sunday
Jabalpur, M.P.	12 to 13 March	Saturday to Sunday
Delhi (Akhand Ramayan)	15 to 16 March	Tuesday to Wednesday
Delhi	16 to 18 March	Wednesday to Friday
Hisar	26 to 27 March	Saturday to Sunday
Jhabua (Maun Sadhna)	1 to 10 April	Friday to Sunday
Bhareri	24 Apr	Sunday
Rattangarh	30 April 1 May	Saturday to Sunday
Kandaghat	8 May	Sunday
Manali	14 to 16 June	Tuesday to Thursday
Delhi	27 to 29 July	Wednesday to Friday
Rohtak	13 to14 August	Saturday to Sunday
Rewari	3 to 4 September	Saturday to Sunday
Gurdaspur	7 to 9 October	Friday to Sunday
Pathankot	15 to 16 October	Saturday to Sunday
Jammu	28 to 30 October	Friday to Sunday
Fazalpur	19 to 20 November	Saturday to Sunday
Sujanpur	25 to 27 November	Friday to Sunday
Alampur	4 Dec	Sunday
Bhiwani	10 to 11 December	Saturday to Sunday
Surat	17 to 18 December	Saturday to Sunday

SADHNA SATSANG 2022

Indore	7 to 10 January	Friday to Monday
Hansi	4 to 7 Feburary	Friday to Monday
Haridwar	12 to 17 April	Tuesday to Sunday
Haridwar (Only for Jhabua Sadhaks)	10 to 13 May	Tuesday to Friday
Haridwar (Only for Jhabua Sadhaks)	15 to 18 May	Sunday to Wednesday
Haridwar	30 June to 3rd July	Thursday to Sunday
Haridwar	8 to 13 July	Friday to Wednesday
Haridwar (Ramayani Satsang)	25 Sept to 4 Oct	Sunday to Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Friday to Monday

Please Note : Programmes will depend upon the Covid-19 situation.

DIKSHA IN OTHER CENTRES 2022		
Indore, MP	Sunday	9 Jan
Jhabua, MP	Sunday	16 Jan
Faridabad	Wednesday	26 Jan
Pilibanga, Rajasthan	Sunday	30 Jan
Hansi, Haryana	Sunday	6 Feb
Bilaspur, HP	Sunday	13 Feb
Sirsa, Haryana	Sunday	27 Feb
Hoshiarpur, Punjab	Sunday	6 Mar
Jabalpur, MP	Sunday	13 Mar
Hisar, Haryana	Sunday	27 Mar
Bhareri, HP	Sunday	24 Apr
Rattangarh, Rajasthan	Sunday	1 May
Kandaghat, HP	Sunday	8 May
Manali, HP	Thursday	16 Jun
Rohtak, Haryana	Sunday	14 Aug
Rewari, Haryana	Sunday	4 Sep
Gurdaspur, Punjab	Sunday	9 Oct
Pathankot, Punjab	Sunday	16 Oct
Jammu, J&K	Sunday	30 Oct
Fazalpur, Punjab	Sunday	20 Nov
Sujanpur, Punjab	Sunday	27 Nov
Alampur, HP	Sunday	4 Dec
Bhiwani, Haryana	Sunday	11 Dec
Surat,Gujrat	Sunday	18 Dec

DIKSHA IN SHREE RAM SHARNAM DELHI		
Jan	2	Sunday
Feb	20	Sunday
March	20	Sunday
April	10	Sunday
May	29	Sunday
July	13	Wednesday
August	21	Sunday
September	11	Sunday
October	23	Sunday
November	20	Sunday
December	25	Sunday

POORNIMA - 2022		
January	17	Monday
Feb	16	Wednesday
March	18	Friday
April	16	Saturday
May	16	Monday
June	14	Tuesday
July	13	Wednesday
August	12	Friday
September	10	Saturday
October	9	Sunday
November	8	Tuesday
December	8	Thursday

Satsang at Chambi, H.P.
22 May. 10 am to 11.30 am.
11:30 am Diksha

Please Note : Programmes will depend upon the Covid-19 situation.

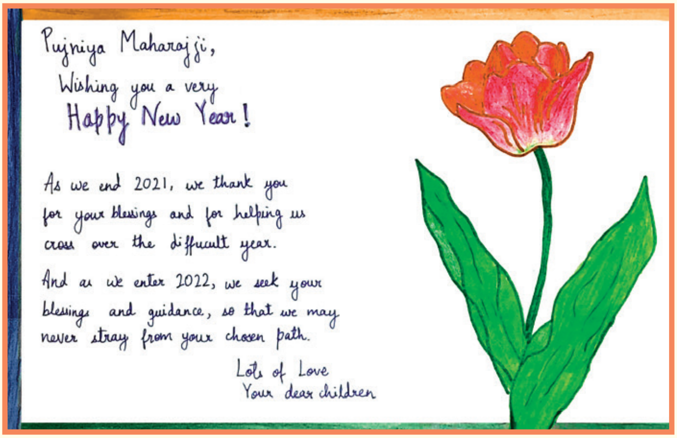

Download Images for colouring - click on the given link below

Image 1 - http://www.ibiblio.org/ram/satya_sahitya/Rama5.jpg

Image 2 - http://www.ibiblio.org/ram/satya_sahitya/Rama6.jpg

Image 3 - http://www.ibiblio.org/ram/satya_sahitya/Rama7.jpg

Dear Children,

You are invited to colour the picture which is in the link below and submit it by 1 February 2022. The best pictures will be published in the April issue of *Satya Sahitya*. Please note the following:

1. Please do not write your name on the picture. Please write your name and address at the back of the picture. No names will be published.
2. Please note that pictures will not be returned and all entries will be reviewed.
3. Please WhatsApp your colored picture to either of the following phone numbers +91-8360781858 or +61–450173196. You could also post it to Shree Ram Sharnam, 8A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024, India.
4. If sending by WhatsApp, please take a photograph of your picture without flash and in proper lighting, so that the picture quality is good.

We look forward to receiving your colourings. ■

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924